OM - 14 - 2021 FINAL_Page 1 and 2 28/09/2021 5:11 PM Page 5

जो नहीं है... उस अस्तित्व की लड़ाई किसलिए!

परमात्मा हमसे जो कुछ भी कराना चाहते हैं, उसका हमें लिखित प्रमाण भी देते हैं। उनका एक अस्तित्व है, अस्तित्व वाला कोई भी हो, वो उस दौर के उन महकमों में शामिल होता है, जो चल रहा होता है। हम सभी परमात्मा के अस्तित्व को जानते भी हैं, पहचानते भी हैं, लेकिन नींव हमारी मज़बूत बनी नहीं, कारण... जाना भी थोड़ा, पहचाना भी थोड़ा, ऐसे से प्राप्ति भी थोड़ी ही है। हम सभी ऊपर से कहते रहते हैं कि सबकुछ भगवान ही कर रहा है, अंदर से डर भी लग रहा है, तभी तो इंतज़ाम कर रहे हैं। सभी अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे हैं।

शुरुआत घर में, कहते हैं... कि घर में एक आत्मा आई। उस समय उसका कोई नाम नहीं, सिर्फ एक बच्चा जो हाथ-पाव मारता हुआ आपके सामने है, रीयल है, वास्तविक है। वो अपनी न पहचान बना रहा है, न बता रहा है, न जता रहा है। सिर्फ किलकारियां ले रहा है, आस-पास खड़े सभी उसके अस्तित्व को समझ रहे हैं कि ये आत्मा है, भगवान का रूप है, वो तो नहीं बता रहा है। असली आत्मिक स्थिति यही है और वास्तविकता है कि हमें कुछ न कहना पड़े, कुछ न सोचना पड़े, लोग हमारे लिए इंतज़ार करें, इंतज़ाम करें और सोचें।

कहावतें कही जाती रही हैं, सबकुछ हम सबको छोड़ कर जाना है, वो चीज़ हमारी धारणा में हो कि छोड़ना तो है ही, चाहे ज़बरदस्ती ही छोड़ें, लेकिन आगे फिर पकड़ने का सिलसिला भी छोड़ें तब ना! जो यहाँ सब कुछ छोड़ेगा, उसे ही पूरा विश्व मिलेगा। सुबह से लेकर शाम तक बस अस्तित्व की लड़ाई। कोई बोलकर, जताकर, बताकर, अपनी बुद्धि दिखाकर दर्शा रहे हैं कि 'हम हैं'। अरे! आप नहीं हैं तभी तो 'हैं' को दर्शा रहे हैं। अगर आप हमेशा होते तो आपको यह सब बताने और जताने की लड़ाई नहीं लड़नी पड़ती। हम आप सोचें कि विश्व महाराजन लड़ाई लड़ेंगे क्या! अभी लड़ाई हाथों की शक्ति ही है, किस-किस से लड़ेंगे? हमारे अस्तित्व में ही एक-दूसरे के प्रति भाव कॉम्पीटिशन के आते हैं, जिसमें ईर्ष्या व नफरत पैदा होती है।

जो भी अस्तित्व शरीर का है, वो दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है। हम सभी समझदार बन गए तो कैसी लड़ाई व कैसा भ्रम! आपको भी यह बात पता है कि आप किसी को भी नहीं बचा पायेंगे, तो क्यों नहीं वैराग्य आ रहा है! जब तक वैराग्य जान-बूझकर नहीं आयेगा अर्थात् समझकर हम ये सारी चीज़ें नहीं छोड़ेंगे, तब तक खुशी अंदर हमेशा हो नहीं सकती। वैराग्य का आधार अभ्यास... अभ्यास...। बस एक बात, हम सभी कुछ दिन के मेहमान हैं, सब कुछ छोड़ कर जाना है। यह अभ्यास हमें खुशी देगा। क्योंकि शारीरिक अस्तित्व जैसे ही छूटा, खुशी बढ़ जायेगी। फिर कोई इंतज़ाम नहीं, कोई स्थिति नहीं, कोई मूड खराब नहीं। जो होगा वो अच्छा ही है, क्योंकि हम अब अस्तित्व से ऊपर उठ गए। इसी का मिसाल तो सीता जी का है, जो अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही थीं कि मैं आपकी पत्नी हूँ, पवित्र हूँ, प्रमाण देने के लिए परीक्षा पर परीक्षा, कितनी परीक्षाएं! तो दिखाया जाता है कि बुद्धि जब सबको समझा नहीं पाती तो वैराग्य आता है, देहभान, शरीर का भान टूटता है, वहाँ भी टूटा, धरती फटी, सीता समा गयीं। माना देहभान नष्ट। इसलिए अस्तित्व की लड़ाई ही दुःख पैदा करती है। जो वैराग्य से पैदा होता प्यार व खुशी, वो अविनाशी होता, उसे कोई छीन नहीं सकता, उसे कोई हरा नहीं सकता। सीता के दो बच्चे लव और कुश इसी के प्रतीक हैं, जिन्होंने अपने सभी सगे-सम्बंधियों को युद्ध में हरा दिया। बस ऐसा वैराग्य कि दोबारा उस दुनिया का कोई भी हमसे बंध न पाए, सब मूर्छित हो जाएं हमारी तरंगों से। इसलिए अस्तित्व को छोड़ो, बस वास्तविकता से नाता जोड़ो। जीवन का मर्म यही है और यही कटु सत्य है।

दिल की बात

साकार मुरली का भाव और अनुभूति की कलम

हम बिगड़े तो जग बिगड़ा, हम सँवरे तो जग सँवरेगा। स्व की सत्यता और परमात्म परिचय से दिल को 'समझ' के वो आयाम मिले, बातों के उत्तर दिल बाहर तत्वों में खोजा करता था, आत्मा को ज्ञान में दिल के भीतर ही मिले। प्यारे बाबा ने समझाया कि तत्वों सहित समस्त मानव को बदलने वाली एक ही यह जादुई युनिवर्सिटी है जहां सबकी सद्गति होती है। इसलिए कहीं नहीं भटकना है, बाबा के संग घर में, रीयल वर्ल्ड युनिवर्सिटी के ज्ञान-योग में गहरे डूब जाना है। घर में ही सब कुछ मिल रहा, भला ऐसा जादू और कहाँ!

जिस भगवान के लिए दिल आतुर था, स्थूल के बीच घिरा हुआ सूक्ष्मता को खोज रहा था, जब वो ही पा लिया तो निश्चयी दिल को स्थूल आँखो से दिखता संसार ज्ञान से भूल जाना है और भीतरी आँख से अपने प्यारे घर को निहारना है। अब अटूट निश्चयी दिल के सारे लेनदेन एक बाबा के साथ करने हैं, पतितों के साथ नहीं, क्योंकि रावण मत और मनमत पर चलने के नतीजे ने आत्मा का कितना बुरा हाल किया है!

अब नया दौर आने को है जिसमें पुराना सब बदल नया हो जाएगा। झूठखण्ड गायब होकर पुनः सचखण्ड मुस्करायेगा। भक्ति, दुःखों की रात गायब हो ज्ञान दिन में सुख का सवेरा मुस्करायेगा। अब दिल को हर बात में बाबा से ही राय लेनी है। प्यार और सुख के सागर बाबा प्यार की वो प्यारी दुनिया सजाते हैं जहां हर बात प्यारी है। केवल आत्म-साक्षात्कार कोई जादू नहीं करेगा, ज्ञान को जीकर संस्कार मीठे और पावन बनाने से ही सारा कमाल होगा।

प्यारे बाबा के साथ को पाकर दिल ऐसा शक्तिशाली हो जाता है कि समस्याएं फिर दिल को हिलाती नहीं हैं बल्कि शक्तियों से सजाकर ऊंचा उठाती हैं। दिल को हर समस्या पहचानी ही लगती है कि हर कल्प पार पहुंचे हैं। बहादुर दिल हैरान न होकर संतुष्ट ही रहता है कि इतना बड़ा भगवान मेरे साथ है तो समस्या में शक्ति न लगाकर झट निवारण करता है।

राय पिथौरागढ़-उत्तराखण्ड। डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट डॉ. आशीष चौहान को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. कनिका।

वडोदरा-मंगलवाड़ी(गुज.)। गणदेवीकर ज्वैलर्स के ओनर्स सुनील भाई गणदेवीकर व सी.ई.ओ. रूषील भाई गणदेवीकर सहित स्टाफ को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. सरिता बहन तथा ब्र.कु. वंदना बहन।

मुम्बई-मलाड। इंडियन आर्मी द्वारा रक्षाबंधन कार्यक्रम के लिए ब्रह्माकुमारीज़ को आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम में ब्र.कु. कुंती दीदी ने रक्षाबंधन का आध्यात्मिक रहस्य स्पष्ट करने के पश्चात् कर्नल दीपक कुमार तथा अन्य ऑफीसर्स सहित सभी जवानों को रक्षासूत्र बांधा। ब्र.कु. शोभा बहन ने ब्रह्माकुमारी संस्थान का परिचय दिया। कर्नल दीपक कुमार ने संस्थान की सराहना करते हुए कहा कि लोगों की निःस्वार्थ सेवा करने वाला ये बेस्ट और बिगेस्ट संस्थान है।

गोवा-पणजी। वीकनेक्ट स्टार ईवेंट्स एंड एंटरटेनमेंट द्वारा गोवा स्थित होटल पार्क रेगिस में आयोजित 'इंटरनेशनल ग्लोरी अवॉर्ड्स 2021' में प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता सोनू सूद द्वारा अहमदनगर,महा. के डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके को भारत के प्राचीन राजयोग के प्रचार-प्रसार के लिए 'इंटरनेशनल ग्लोरी अवॉर्ड 2021' प्रदान किया गया। तत्पश्चात् सोनू सूद को संस्था के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय माउंट आबू आने का निमंत्रण देकर ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. वनिता बहन।

फिल्लौर-पंजाब। डी.एस.पी. हरनील सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. राजकुमारी बहन।